इंदिरा एकादशी — चयनित पूर्ण अध्याय का पुनर्कथन

Indira Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — Padma Purana 6.58, exact controlling revision 336439. Also compared: Wikisource revision API — complete matching archived content; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — source/adaptation licence; Wisdomlib / N. A. Deshpande — full chapter 58 English comparison only; modern prose not copied.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.58.1–36, Sanskrit Wikisource revision 336439, not a transcription of the original text.

इंद्रसेन और नारद का आगमन

KATHA 6.58.1–11

युधिष्ठिर आश्विन के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम पूछते हैं। कृष्ण उसे इंदिरा कहते हैं और उसके माहात्म्य को पाप से मुक्ति, पूर्वजों की गति तथा कथा सुनने के वाजपेय-समान फल से जोड़ते हैं। ये ग्रन्थ के धार्मिक आश्वासन हैं। इसके बाद कृतयुग की कथा आती है। माहिष्मती के राजा इंद्रसेन धर्मपूर्वक राज्य चलाते थे। उनके पुत्र-पौत्र थे, धन और अन्न था तथा उनका मन विष्णु-भक्ति में लगा रहता था। वे गोविंद के नामों का जप और अध्यात्म का ध्यान करते थे।

एक दिन राजा सभा में बैठे थे। कथा में नारद आकाश से वहाँ आते हैं। इंद्रसेन उठकर हाथ जोड़ते हैं, उनका सम्मान करके आसन देते हैं। फिर कहते हैं कि उनकी कृपा से सब कुशल है और उनके दर्शन से यज्ञ-कर्म सफल हुए हैं। राजा आदरपूर्वक उनके आने का कारण पूछते हैं। यहाँ किसी आधुनिक परिवार की आर्थिक स्थिति या पूर्वजों की दशा का निर्णय नहीं दिया गया है।

Yudhishthira asks the name of the Ekadashi in Ashvina's dark fortnight. Krishna identifies Indira and associates its greatness with release from sin, a better state for ancestors and hearing merit compared to a Vajapeya sacrifice. These are the scripture's religious assurances. He then tells a story set in Kritayuga. Indrasena rules Mahishmati righteously, has children and grandchildren, wealth and grain, and is devoted to Vishnu. He repeats Govinda's names and reflects on spiritual matters.

One day, while the king sits in his assembly, Narada arrives from the sky within the narrative. Indrasena rises with joined hands, honours him and provides a seat. He says all is well through the sage's grace and that seeing him has made his sacrificial acts fruitful. He respectfully asks why Narada has come. This does not assess any modern family's finances or the condition of its ancestors.

पिता का संदेश और राजा का प्रश्न

KATHA 6.58.12–19

नारद कहते हैं कि वे ब्रह्मलोक से यमलोक गये थे। वहाँ सूर्यपुत्र यम ने आदर से उन्हें आसन दिया। उस सभा में उन्होंने इंद्रसेन के पिता को देखा। पिता ने बहुत पुण्य किये थे, फिर भी कथा उनके वहाँ होने को व्रत की त्रुटि और पूर्वजन्म से जुड़े किसी व्यवधान से जोड़ती है। ये कथा के अपने कारण हैं, किसी शोकाकुल परिवार के बारे में प्रमाण नहीं।

पिता ने नारद से अपने पुत्र तक संदेश पहुँचाने को कहा: वे यम के समीप हैं और चाहते हैं कि पुत्र इंदिरा के पुण्य का समर्पण करके उन्हें स्वर्ग पहुँचाये। नारद राजा से पिता के लिए यह व्रत करने को कहते हैं और कथा के भीतर उसकी शक्ति से स्वर्ग-प्राप्ति का आश्वासन देते हैं। इंद्रसेन तब विधि, पक्ष और तिथि पूछते हैं। इस संवाद को किसी मृत व्यक्ति की परलोक-दशा जानने की प्रक्रिया, शोक के लिए दोषारोपण या सुनिश्चित मुक्ति का वादा न समझें।

Narada says he travelled from Brahma's world to Yama's, where the Sun's son welcomed him and gave him a seat. There he saw Indrasena's father. Although the father had performed many meritorious acts, the narrative attributes his presence there to a defect in a vow and some obstruction connected with a former birth. These are the story's explanations, not evidence about a grieving family.

The father asked Narada to carry a message to his son: he remains near Yama and wishes his son to dedicate Indira's merit to send him to heaven. Narada accordingly urges the king to observe it for his father and promises a heavenly destination within the story. Indrasena asks about the method, fortnight and day. This dialogue is not a means of diagnosing a deceased person's afterlife, blaming bereavement or guaranteeing liberation.

विधि-वर्णन: ऐतिहासिक प्रसंग, निर्देश नहीं

KATHA 6.58.20–30

नारद आश्विन कृष्ण दशमी से द्वादशी तक की विधि बताते हैं। दशमी में प्रातः और मध्याह्न स्नान, श्रद्धापूर्वक पितृ-श्राद्ध, एक बार भोजन और भूमि पर शयन का वर्णन है। एकादशी में मुख धोने, दन्तधावन छोड़ने और निराहार रहकर अगले दिन भोजन तथा विष्णु की शरण लेने का संकल्प आता है। संकल्प का भाव यहाँ बताया गया है; किसी मन्त्र को अलग निकालकर अनिवार्य विधि नहीं बनाया गया।

आगे शालग्राम शिला के सामने स्नान, धूप-गन्ध से हृषीकेश की पूजा और केशव के समीप रात्रि-जागरण वर्णित हैं। द्वादशी की सुबह हरि-पूजा और पितरों के लिए श्राद्ध कहा गया है। गेहूँ का चूर्ण, जौ, चावल, तिल, उड़द और चने जैसे अन्नों का उल्लेख मिलता है। ब्राह्मणों को सम्मान, भोजन और दक्षिणा देने तथा सम्बन्धियों, बेटी के पुत्र और अपने पुत्रों के साथ संयत वाणी से भोजन करने का वर्णन है। नारद राजा से सावधानीपूर्वक विधि पूरी करने को कहते हैं।

यह पूरे चयनित अध्याय का वर्णन है, व्यवहारिक श्राद्ध-मैनुअल नहीं। भूमि पर सोना, स्वच्छता छोड़ना, भूख सहना, रात भर जागना या दक्षिणा देना इस पाठ की शर्त नहीं है। भोजन, पानी, विश्राम, स्वच्छता और आवश्यक उपचार उपलब्ध रखें; अपनी व्यक्तिगत श्राद्ध-तिथि को इस कथा से न निकालें।

Narada describes a sequence from Ashvina's dark Dashami through Dvadashi. Dashami includes morning and midday bathing, ancestral shraddha with faith, one meal and sleeping on the ground. Ekadashi includes washing the face, omitting tooth-cleaning and a resolve to remain without food and pleasures, eat the next day and seek Vishnu's refuge. The resolve is described in prose, not extracted as a compulsory sacred formula.

The text then places bathing before the Shalagrama stone, worship of Hrishikesha with incense and fragrance, and a vigil near Keshava. On Dvadashi morning it describes Hari worship and ancestral shraddha, mentioning wheat flour, barley, rice, sesame, black gram and chickpeas. It honours Brahmins with food and gifts and describes eating with relatives, a daughter's son and one's sons, with restrained speech. Narada urges careful completion.

This covers the selected chapter's discourse, not a practical shraddha manual. Floor sleeping, abandoning hygiene, enduring hunger, staying awake or giving gifts are not conditions of this reader. Food, water, rest, hygiene and necessary treatment remain available; do not derive an individual's ancestral tithi from the story.

कथा का पूरा समापन

KATHA 6.58.31–36

नारद कहते हैं कि इस विधि से राजा के पितर विष्णुलोक पहुँचेंगे और फिर अन्तर्धान हो जाते हैं। कृष्ण बताते हैं कि इंद्रसेन ने अन्तःपुर के लोगों, पुत्रों और सेवकों सहित बतायी गयी विधि से व्रत किया। धार्मिक कथा में आकाश से फूल बरसते हैं और राजा के पिता गरुड़ पर बैठकर हरि के धाम जाते हैं। इंद्रसेन स्वयं भी बाधारहित राज्य चलाते हैं, पुत्र को राजपद सौंपते हैं और बाद में स्वर्ग जाते हैं।

अन्त में कृष्ण इंदिरा-व्रत के माहात्म्य का वर्णन पूरा होने की बात कहते हैं। पढ़ने और सुनने को पाप से मुक्ति, यहाँ भोग और विष्णुलोक में दीर्घ निवास से जोड़ा गया है। इसके बाद अध्याय 58 का अलग समापन-वाक्य आता है, जो उत्तरखण्ड के उमापति–नारद संवाद में आश्विन कृष्ण इंदिरा एकादशी को नाम देता है। अध्याय का बाहरी संवाद कृष्ण–युधिष्ठिर है; दोनों स्तरों को एक ही बातचीत न समझें। कथा के फूल, गरुड़ और लोक-प्राप्ति धार्मिक चित्र हैं, किसी अपने के उद्धार का प्रमाण या परिवार पर व्रत का दबाव नहीं।

Narada says the king's ancestors will reach Vishnu's world and then disappears. Krishna relates that Indrasena follows the described observance with the royal household, sons and servants. Within the religious story, flowers fall from the sky and his father travels on Garuda to Hari's abode. Indrasena rules without obstruction, installs his son on the throne and later reaches heaven himself.

Krishna closes the account by praising reading and hearing it as release from sin, enjoyment here and a long stay in Vishnu's world. A separate chapter-58 colophon identifies Ashvina's dark Indira Ekadashi within the Uttara section's Umapati–Narada dialogue. The chapter's immediate framing is Krishna–Yudhishthira; these two dialogue levels are not collapsed. The flowers, Garuda and otherworldly destinations are religious imagery, not proof of a loved one's liberation or grounds to pressure a family into observance.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Indira Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.58.1–36, revision 336439, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement is implied. This notice applies to the retelling and its language layers, not unrelated site content or code. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Source attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.